Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति

अध्याय - 6

लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट

भाग - 2

Satyaveer Yadav

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

आपातकाल के सबक

रह गये कुछ सवाल :-

- लोकतांत्रिक सरकार के रोजमर्रा के कामकाज और विभिन्न दलों और समूहों के निरंतर जारी राजनीतिक विरोध के बीच तनाव की स्थिति - ऐसे में दोनों के बीच सधा हुआ संतुलन क्या हो?
- नागरिकों को विरोध की कार्यवाही में शामिल होने की आजादी किस हद तक होनी चाहिए?
- आपातकाल के समय शासक दल ने पुलिस और प्रशासन को अपना राजनीतिक औजार बनाकर इस्तेमाल किया। यह समस्या आपातकाल के बाद भी। क्या हो इसका समाधान?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

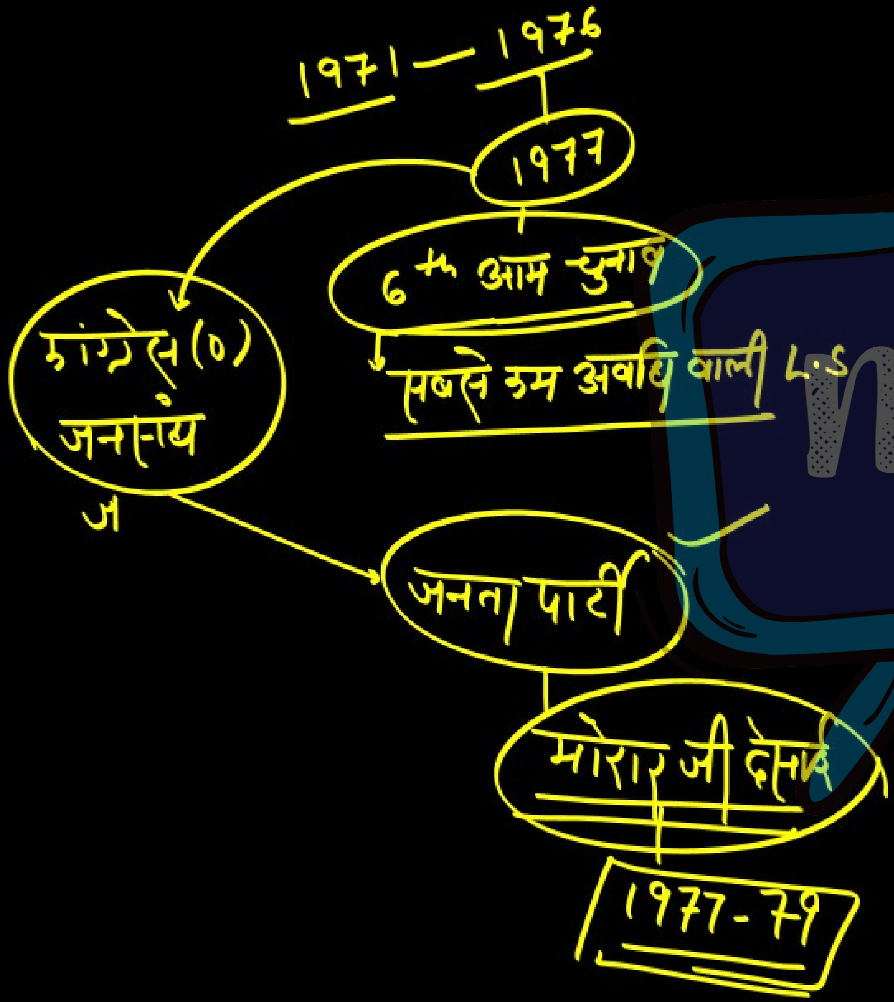

- जैसे ही आपातकाल खत्म हुआ और लोकसभा के चुनावों की घोषणा हुई वैसे ही सबसे जरूरी और कीमती सबक राजव्यवस्था ने सीख लिया।
- 1977 के चुनाव एक तरह से आपातकाल के अनुभवों के बारे में जनमत संग्रह थे।
- विपक्ष ने 'लोकतंत्र बचाओ' के नारे पर चुनाव लड़ा।
- जनादेश निर्णायक तौर पर आपातकाल के विरूद्ध था।
- इस अर्थ में देखे तो 1975-77 के अनुभवों की एक परिणति भारतीय लोकतंत्र की बुनियाद को पुख्ता बनाने में हुई।

Under CSR Support by ipca Foundation

लोकसभा चुनाव (1977)

चुनाव से पहले :-

- जनवरी 1977 में चुनाव कराने का फैसला।
- सभी नेताओं और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को रिहा किया गया।
- आपातकाल लागू होने से पहले से ही विपक्षी पार्टियां एक दूसरे के नजदीक आ रही थी।
- चुनाव से ठीक पहले इन पार्टियों ने एकजुट हो जनता पार्टी के नाम से दल बनाया।
- नई पार्टी ने जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व स्वीकार किया।
- कांग्रेस कुछ नेता जो आपातकाल के खिलाफ थे, इस पार्टी में शामिल हुए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ अन्य नेताओं ने जगजीवन राम के नेतृत्व में एक नयी पार्टी बनायी – 'कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी'
- 1977 के चुनावों को जनता पार्टी ने आपातकाल के ऊपर जनमत संग्रह का रूप दिया।
- इस पार्टी के चुनाव प्रचार में शासन के अलोकतांत्रिक चरित्र और आपातकाल के दौरान की गयी ज्यादातियों पर जोर दिया।

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

चुनाव के नतीजे

- कांग्रेस चुनाव हारी
  - इंदिरा गांधी तथा उनके पुत्र संजय गांधी चुनाव हारे।
  - 154 सीटें तथा 35 प्रतिशत से भी कम वोट
- जनता पार्टी तथा साथी दल
  - 330 सीटें
    - अकेली जनता पार्टी को 295 सीटें मिलीं
- राजस्थान तथा मध्यप्रदेश में कांग्रेस को एक–एक सीट
- बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, और पंजाब में कांग्रेस को एक भी सीट नहीं।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- कांग्रेस देश में हर जगह चुनाव नहीं हारी थी।
- दक्षिणी भारत के राज्यों में कांग्रेस विजयी हुई थी।
- महाराष्ट्र, गुजरात और उड़ीसा में कांग्रेस ने कई सीटों पर अपना कब्जा बरकरार रखा था।

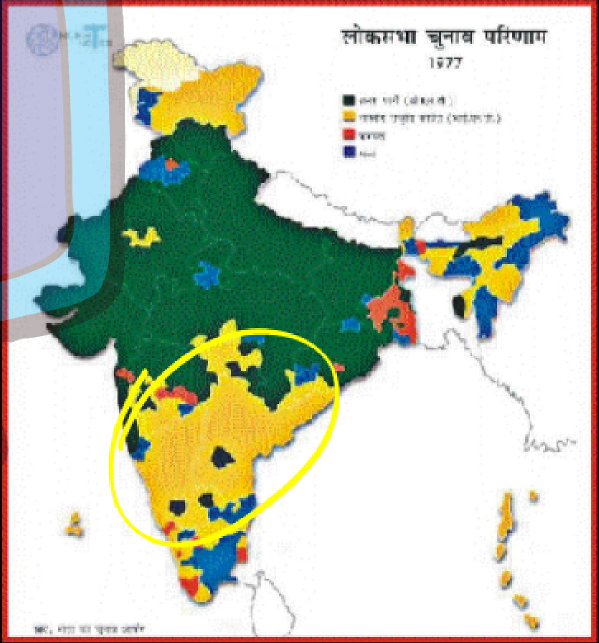

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

चुनाव परिणाम - कारण :-

- आपातकाल का प्रभाव हर राज्य पर एकसमान नहीं पड़ा था।
- लोगों को जबरन उजाड़ने और विस्थापित करने अथवा जवान नसबंदी करने का काम ज्यादातर उत्तर भारत के राज्यों में हुआ था।

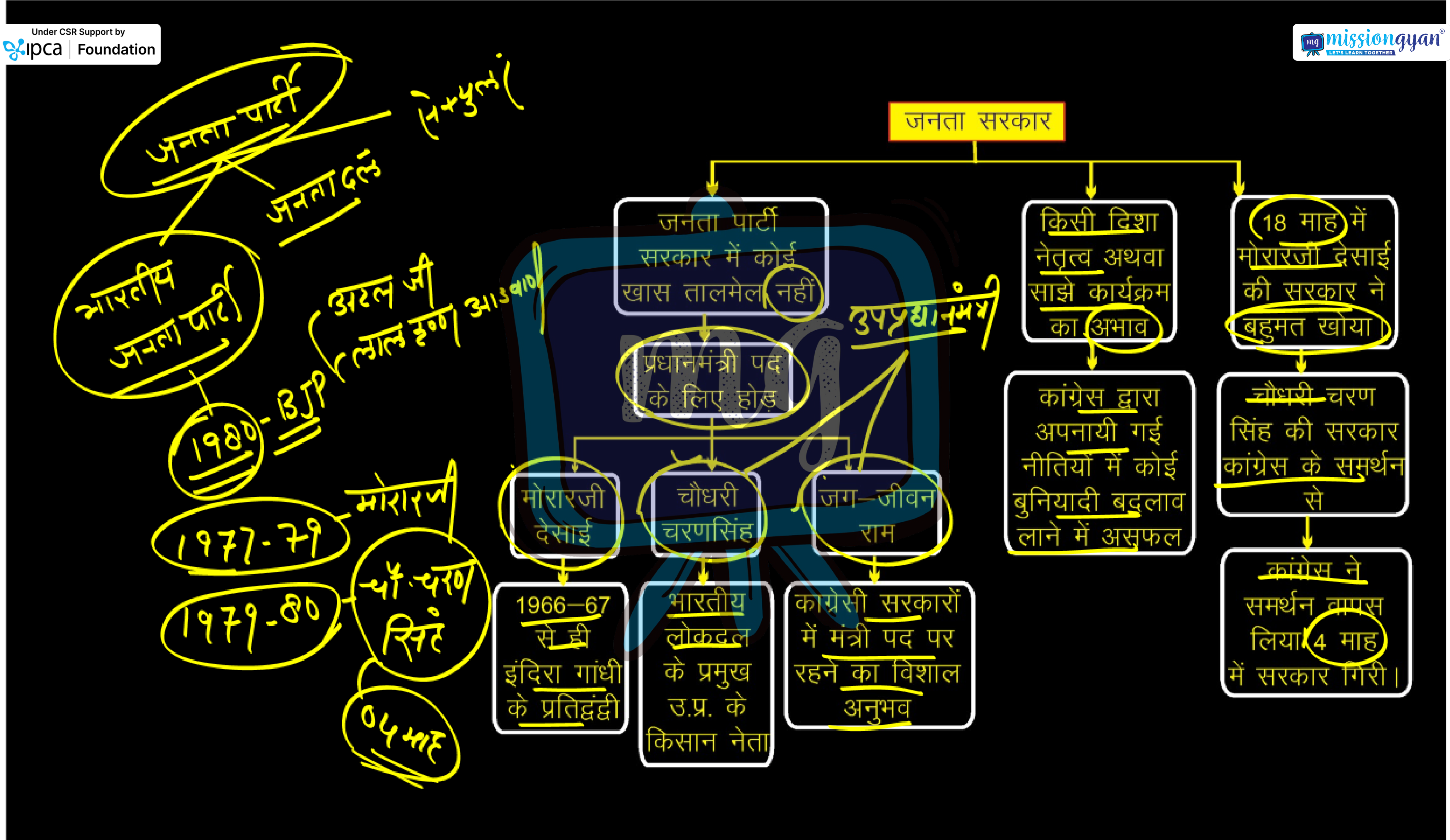

Under CSR Support by
ipca Foundation
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
जनता सरकार
जनता पार्टी सरकार में कोई खास तालमेल नहीं
प्रधानमंत्री पद के लिए होड़
मोरारजी देसाई
चौधरी चरणसिंह
जग–जीवन राम
1966–67 से ही इंदिरा गांधी के प्रतिद्वंद्वी
भारतीय लोकदल के प्रमुख उ.प्र. के किसान नेता
कांग्रेसी सरकारों में मंत्री पद पर रहने का विशाल अनुभव
किसी दिशा नेतृत्व अथवा साझे कार्यक्रम का अभाव
कांग्रेस द्वारा अपनायी गई नीतियों में कोई बुनियादी बदलाव लाने में असफल
18 माह में मोरारजी देसाई की सरकार ने बहुमत खोया।
चौधरी चरण सिंह की सरकार कांग्रेस के समर्थन से
कांग्रेस ने समर्थन वापस लिया 4 माह में सरकार गिरी।
जनता पार्टी
जनता दल
भारतीय जनता पार्टी
1980 - BJP
अटल जी
लाल कृष्ण आडवाणी
उपप्रधानमंत्री
1977-79 - मोरारजी
1979-80 - चौ. चरण सिंह
04 माह

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

इ. गांधी

1980 - 84

अब आगे :-

- जनवरी 1980 में लोकसभा के नए सिरे से चुनाव।
- जनता पार्टी को उत्तर भारत में मिली करारी शिकस्त।
- इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ने भारी सफलता हासिल की।
- 352 सीटों के साथ सत्ता में।

1977-1979 के लोकतांत्रिक राजनीति का सबक

- अगर सरकार अस्थिर हो और उसके भीतर कलह हो तो मतदाता ऐसी सरकार को कड़ा दण्ड देते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

विरासत (1975-1980) :-

- कांग्रेस पार्टी एक नेता की लोकप्रियता पर निर्भर हुई।
- कांग्रेस की प्रकृति में आये बदलावों के मध्यनजर अन्य विपक्षी दल 'गैर-कांग्रेसवाद' की राजनीति की तरफ मुड़े।
- 1977 में लोकसभा के साथ-साथ उत्तर भारत के राज्यों में भी और गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं।
- उन सरकारों के बनने में पिछड़ी जाति के नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- आपातकाल और उसके आसपास की अवधि को संवैधानिक संकट के रूप में भी देखा जा सकता है।
- संसद और न्यायपालिका का संघर्ष भी आपातकाल के मूल में।

राजनीति संकट के रूप में -

- सत्ताधारी पार्टी के पास पूर्ण बहुमत था फिर भी इसके नेतृत्व ने लोकतंत्र को ठप्प करने का फैसला किया।
- आपातकाल के दौरान प्राप्त संवैधानिक शक्तियों का दुरुपयोग हुआ।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्न 1. दिये गये कार्टून को देखकर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) चित्र में दिखाई गई महिला कौन है ?

(ii) यह कार्टून किससे संबंधित है

प्रश्न 2. 1977 के लोकसभा चुनावों में किस पार्टी ने जीत दर्ज की ?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1. बताएं कि आपातकाल के बारे में निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत :

(क) आपातकाल की घोषणा 1975 में इंदिरा गांधी ने की।

(ख) आपातकाल में सभी मौलिक अधिकार निष्क्रिय हो गए।

(ग) बिगड़ती हुई आर्थिक स्थिति के मद्देनजर आपातकाल की घोषणा की गयी थी।

(घ) आपातकाल के दौरान विपक्ष के अनेक नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

(ड.) सी.पी.आई. ने आपातकाल की घोषणा का समर्थन किया।

उत्तर – (क) सही (ख) सही

(ग) गलत (घ) सही

(ड.) सही

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

2. निम्नलिखित में से कौन-सा आपातकाल की घोषणा के संदर्भ में मेल नहीं खाता है :

(क) 'संपूर्ण क्रांति' का आह्वान

(ख) 1974 की रेल-हड़ताल

(ग) नक्सलवादी आंदोलन

(घ) इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला

(ङ.) शाह आयोग की रिपोर्ट के निष्कर्ष

उत्तर : (ग) नक्सलवादी आंदोलन

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

3. निम्नलिखित का मेल करें:

(क) संपूर्ण क्रांति	(i) इंदिरा गांधी
(ख) गरीबी हटाओ	(ii) जयप्रकाश नारायण
(ग) छात्र आंदोलन	(iii) बिहार आंदोलन
(घ) रेल हड़ताल	(iv) जॉर्ज फर्नांडिस

उत्तर : (क) → (iii), (ख) → (i), (ग) → (ii), (घ) → (iv)

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

4. किन कारणों से 1980 में मध्यावधि चुनाव करवाने पड़े?

उत्तर :

- जनता पार्टी की सरकार में कोई तालमेल नहीं।
- प्रधानमंत्री पद के लिए होड़।
- मोरारजी देसाई के नेतृत्व में बनी सरकार 18 माह में अपना बहुमत खो बैठी।
- कांग्रेस पार्टी के समर्थन से चौधरी चरण सिंह की सरकार मात्र चार महीने ही सत्ता में रह पायी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

5. जनता पार्टी ने 1977 में शाह आयोग को नियुक्त किया था। इस आयोग की नियुक्ति क्यों की गई थी और इसके क्या निष्कर्ष थे?

उत्तर : मई 1977 में जनता पार्टी की सरकार द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश श्री जे.सी. शाह की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया।

उद्देश्य : '25 जून 1975' के दिन घोषित आपातकाल के दौरान की गयी कार्यवाही तथा सत्ता के दुरूपयोग अतिचार और कदाचार के विभिन्न आरोपों के विविध पहलुओं की जांच करना।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

शाह आयोग के निष्कर्ष :-

- निवारक नजरबंदी क़ानून का दुरूपयोग आपातकाल के दौरान किया गया।
- इस कानून के तहत एक लाख ग्यारह हजार लोगों की गिरफ्तारी की गयी।
- बिना किसी कानून की स्वीकृति के अखबारों पर सेंसरशिप लगा दी गयी।
- यहां तक कि दिल्ली बिजली आपूर्ति निगम के महाप्रबंधक को दिल्ली के लेफ्टिनेंट गवर्नर के दफ्तर से 26 जून 1975 की रात 2 बजे मौखिक आदेश मिला कि सभी अखबारों की बिजली आपूर्ति काट दी जाये।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

6. 1975 में राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा करते हुए सरकार ने इसके क्या कारण बताये थे?

उत्तर : सरकार के अपातकाल के पक्ष में तर्क :-

- शासक दल को अपनी नीतियों के अनुसार शासन नहीं चलाने दिया जा रहा था।
- बार-बार धरना प्रदर्शन और सामूहिक कार्यवाही लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं।
- सरकार पर निशाना साधने के लिए लगातार गैर-संसदीय राजनीति का सहारा लोकतंत्र में उचित नहीं।

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- इंदिरा गांधी ने शाह आयोग को चिटठी में लिखा कि ''विनाशकारी ताकतें सरकार'' के प्रगतिशील कार्यक्रमों में अड़ंगें डाल रही थी और मुझे गैर-संवैधानिक साधनों के बूते सत्ता से बेदखल करना चाहती थी।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

7. 1977 के चुनावों के बाद पहली दफा केन्द्र में विपक्षी दल की सरकार बनी। ऐसा किन कारणों से संभव हुआ?

उत्तर :

- देश का आर्थिक संकट।
- 1971 के समय किये गये वादों को निभाने में कांग्रेस पार्टी असफल।
- आवश्यक चीजों की कीमतों में वृद्धि।
- सभी विपक्षी दलों का एकजुट हो जनता पार्टी का निर्माण।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- आपातकाल से आहत जनता।
- संविधान को बदलने का प्रयास।
- मौलिक अधिकारों का हनन आदि।
- जनता पार्टी का 'लोकतंत्र बचाओ' का जोरदार नारा।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

8. हमारी राजव्यवस्था के निम्नलिखित पक्ष पर आपातकाल का क्या असर हुआ?

- नागरिक अधिकारों की दशा और नागरिकों पर इसका असर।
- कार्यपालिका और न्यायपालिका के संबंध
- जनसंचार माध्यमों के कामकाज
- पुलिस और नौकरशाही की कार्रवाइयाँ

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : (क) आपातकाल की घोषणा के साथ ही सभी मौलिक अधिकार स्थगित कर दिये गये।

- नागरिकों के विचारों की अभिव्यक्ति, घूमने-फिरने व सभाएं करने पर रोक लगा दी गयी। नागरिक अपने अधिकारों की मांग के लिए न्यायालय से भी सहायता प्राप्त नहीं कर सकते थे।
- नागरिक अपने जीवन और आजादी के अधिकार से भी वंचित हो गये थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(ख) आपातकाल का न्यायपालिका व कार्यपालिका के संबंधों पर बुरा प्रभाव पड़ा, सरकार ने न्यायपालिका के क्षेत्राधिकार में कमी कर दी। कई प्रमुख पदों के चुनाव को सर्वोच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार से बाहर कर दिया गया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(ग) सरकार ने प्रेस की आजादी पर रोक लगा दी। अखबारों की लाइट तक काटने के मौखिक आदेश दिये गये। जिन समाचारों को छापने से रोका जाता था उस जगह को अखबार में खाली छोड़ दिया जाता था। उस पर भी बाद में रोक लगा दी गयी। कई पत्र-पत्रिकाओं ने सेंसरशिप के आगे घुटने टेकने की जगह बंद होना मुनासिब समझा।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

आपातकाल की घोषणा

राष्ट्रपति – PM की सलाह पर

मन्त्रिमण्डल की सलाह पर (लिखित)

(घ) सरकार ने आपातकाल को लागू करने में पुलिस व नौकरशाही का पूरा सहयोग लिया। पुलिस हिरासत में निर्दोष लोगों को यातनाएं दी गयी, जिनसे कई लोगों की मृत्यु तक भी हो गयी। परिवार नियोजन की नीति को लागू करने के लिए जबरल लोगों की नसबंदी की गयी। गरीब इलाके के निवासियों को विस्थापिता होना पड़ा।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

9. भारत की दलीय प्रणाली पर आपातकाल का किस तरह असर हुआ? अपने उत्तर की पुष्टि उदाहरणों से करें।

उत्तर :

- आपातकाल की स्थितियों के मध्यनजर सभी विपक्षी दलों ने एकजुट हो 'जनता पार्टी' का निर्माण किया।
- लोकसभा चुनावों में इस पार्टी ने जीत दर्ज की।
- ये साबित हुआ कि कांग्रेस पार्टी को हराया जा सकता है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

10. निम्नलिखित अवतरण को पढ़ें और इसके आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दें :

1977 के चुनावों के दौरान भारतीय लोकतंत्र, दो-दलीय व्यवस्था के जितना नजदीक आ गया था उतना पहले कभी नहीं आया। बहरहाल अगले कुछ सालों में मामला पूरी तरह बदल गया। हारने के तुरंत बाद कांग्रेस दो टुकड़ों में बंट गयी..... जनता पार्टी में भी बड़ी अफरा तफरी मच गयी ...... डेविड बटलर, अशोक लाहिड़ी और प्रणव रॉय।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(क) किन वजहों से 1977 में भारत की राजनीति दो दलीय प्रणाली के सामने जान पड़ रही थी?

(ख) 1977 में दो से ज्यादा पार्टियों अस्तित्व में थीं। इसके बावजूद लेखकगण इस दौर के दो दलीय प्रणाली के नजदीक क्यों बता रहे हैं?

(ग) कांग्रेस और जनता पार्टी में किन कारणों से टूट पैदा हुई?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

(क) 1977 के चुनावों के दौरान सभी विपक्षी दलों ने मिलकर एक दल 'जनता पार्टी' का निर्माण कर लिया था। अब चुनावों में टक्कर सीधे सीधे दो पार्टियों के मध्य थी- कांग्रेस तथा जनता पार्टी

(ख) 1977 में चुनावी प्रतियोगिता मुख्य रूप से दो दलों के मध्य ही थी - जनता पार्टी तथा कांग्रेस।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(ग) कांग्रेस में विभाजन 1969 में राष्ट्रपति के चुनाव के समय हुआ। विभाजन का कारण राजनीतिक निर्णयों में भूमिका रहा। इंदिरा गांधी व सिंडिकेंट दोनों ही एक दूसरे से ज्यादा प्रभावशाली व ताकतवर बनना चाहते थे।

✍ जनता पार्टी में आपसी कोई तालमेल नहीं था, इनका कोई साझा कार्यक्रम या योजना नहीं थी। ये तो केवल कांग्रेस का सामना करने के लिए एक हुए थे, चुनाव जीतते ही इस पार्टी के नेताओं में प्रधानमंत्री पद के लिए होड़ मच गयी थी।